

आधुनिक कृषि से रोजगार अवसर

दिग्विजय सिंह*, वैभव पाण्डेय, विवेकानंद सिंह***, रजत सिंह*** और **आलोक कुमार सिंह***

"देश में ग्रामीणांचल में खेती के साथ-साथ कृषि पर आधारित उद्यम करके लोग अपनी आमदनी को बढ़ाते हैं। इनमें मुख्य रूप से पशुपालन, डेरी, मुर्गीपालन, बकरी पालन, मधुमक्खी पालन, मछलीपालन, वर्मीकम्पोस्ट इकाई, मशरूम उत्पादन इकाई, खाद्य प्रसंस्करण इकाई, कृषि मशीनरी, बागवानी शामिल हैं। ग्रीनहाउस में बेमौसमी सब्जी इकाई लगाना भी शामिल है। युवा, देश में बढ़ती हुई आबादी के साथ-साथ बेरोजगारी की समस्या को चुनौती देते हुए इन विकल्पों से रोजगार का सृजन कर सकते हैं। आज भी ग्रामीण लोगों की आय मुख्य रूप से कृषि आमदनी पर ही निर्भर है।"

आजादी के समय भारत की जनसंख्या 34 करोड़ से आज वर्ष 2022 में 137 करोड़ हो गई है। इतनी बड़ी आबादी को खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ पोषक सुरक्षा के तहत कृषि उत्पादों को उचित प्रसंस्करण एवं विपणन के माध्यम से उपभोक्ता तक पहुंचाने में लगने वाले साधनों में कृषि क्षेत्र में अपार रोजगार की संभावनायें हैं।

पशुपालन एवं डेरी क्षेत्र

भारतीय कृषि, पशुपालन एवं डेरी उद्योग के बिना अधूरी है। युवा अच्छी नस्ल की गाय और भैंस का चयन करके इसे एक अच्छे डेरी व्यवसाय के रूप में स्थापित कर सकते हैं। खेती और पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं,कृषि की लागत का एक हिस्सा पशुओं से प्राप्त होता है। पशुओं का चारा फसलों से प्राप्त हो जाता है। डेरी उद्योग पूर्ण रूप से दूध उत्पादन पर निर्भर होता है। पशुओं के गोबर से प्राप्त गोबर गैस ईंधन के रूप में उपयोग



वैज्ञानिक विधि से मछली पालन

*आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या-224229 (उत्तर प्रदेश); **डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर-848125 (बिहार); ***शुएट्स प्रयागराज-211007

कर सकते हैं। दूध से बनने वाले विभिन्न प्रकार के उत्पादों जैसे-दूध पाउडर, दही, छाछ, मक्खन, घी, पनीर आदि के उत्पादन व विपणन में लगे हुए छोटे स्तर की डेरियों, अनेक राज्यों के दुग्ध संघ, राष्ट्रीय स्तर पर डेरी विकास बोर्ड जैसे संस्थानों एवं चमड़े पर आधारित उद्यम द्वारा लोगों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। पशुपालन एवं डेरी उद्योग में तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करके युवा रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

मुर्गीपालन के क्षेत्र में रोजगार

देश की बढ़ती आबादी, रहन-सहन एवं खानपान में परिवर्तन के कारण शाकाहारी वर्ग भी पोषण की दृष्टि से अण्डों का उपयोग करने लगा है। मुर्गीपालन, चिकन प्रसंस्करण को व्यावसायिक रूप में लेकर युवा रोजगार, देश की आय में वृद्धि, देश के निर्यात व जीडीपी में प्रगति को बढ़ावा दिया जाता रहा है। सरकार द्वारा सब्सिडी के माध्यम से छूट देकर युवाओं को रोजगार के अवसर दिए जा रहे हैं।

भेड़-बकरी पालन

भेड़-बकरी पालन में वर्ष 2012 में भेड़-बकरियों की संख्या 65.07 व 135.17 मिलियन थी। यह बढ़कर वर्ष 2019 में 74.26 व 148.88 मिलियन हो गई। सामान्यतौर पर भेड़-बकरी पालन को कम लागत के साथ शुरू किया जा सकता है। इसी कारण से बकरियों को 'गरीब की गाय' कहा जाता है। भेड़ के ऊन, चमड़े एवं इनके मांस की देश के साथ-साथ विदेशों में भी भारी मांग है, जिससे रोजगार के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होती है।

मछलीपालन

भारत को मछली उत्पादन में तीसरा एवं जलीय कृषि में दूसरा स्थान प्राप्त है। राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड के अनुसार भारत में मत्स्यपालन से 145 मिलियन लोगों को रोजगार मिला हुआ है। 333.41 बिलियन टन मछलियों का निर्यात होता है एवं जीडीपी में 1.07 का योगदान मिलता है। मछलीपालन में पूंजी एवं श्रम की कम आवश्यकता होती है। इसके कारण इसमें लागत की तुलना में अधिक आय होती है। मछलीपालन से जुड़े उद्योग जैसे-श्रेणीकरण, पैकिंग करना, उन्हे सुखाना एवं उनका पाउडर बनाना, अचार बनाना, प्रसंस्करण करने के बारे में प्रशिक्षण कृषि विश्वविद्यालय, भाकृअनुप-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा अनुसंधान संस्थान, मुंबई तथा केंद्रीय मत्स्य तकनीकी संस्थान कोच्चि से व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षण ले सकते हैं।

मधुमक्खी पालन

सरकार ने मधुमक्खी पालन को प्रोत्साहित करने के लिए 500 करोड़ रुपये का आवंटन किया है। वर्ष 2005-06 की तुलना में अब शहद उत्पादन 242 प्रतिशत बढ़ गया है। इसके निर्यात में 265 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मधुमक्खी पालन कृषि आधारित, कम समय, कम लागत का लाभदायक व्यवसाय है। वर्ष 2019-20 में शहद का निर्यात 59,536.74 मीट्रिक टन हुआ था। मधुमक्खी पालन करने वालों को बैंक से ऋण की भी सुविधा उपलब्ध हो जाती है।

बागवानी

लोगों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए फल, फूल व सब्जियों की निरंतर मांग बढ़ती जा रही है। बागवानी के उत्पादों की दैनिक मांग होने के कारण कम क्षेत्रफल में भी सब्जियों एवं फलों जैसे-केला, नीबू, पपीता एवं पान की खेती करके अधिक लोगों को रोजगार एवं आमदनी मिल सकती है। फल, फूलों व सब्जियों की कटाई-छंटाई, श्रेणीकरण,पैकिंग, मार्केटिंग, रखरखाव आदि क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं होती हैं।

औषधीय और सुगन्धित पौधों की खेती

लहसुन, प्याज,अदरक, पुदीना और चौलाई जैसी सब्जियां पौष्टिक होने के साथ-साथ औषधीय गुणों से भी भरपूर हैं। इसी कारण इनसे आयुर्वेदिक औषधियां व खाद्य उत्पाद बनाये जाते हैं। इसके साथ-साथ इनसे संबंधित रोजगार करके अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है।

कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण के क्षेत्र में रोजगार

कृषि से प्राप्त हुए उत्पादों का प्रसंस्करण एवं परिरक्षण करके, जैसे-गन्ने से गुड़, मूंगफली से स्वादिष्ट नमकीन, फलों से जूस, कैंडी, जैम, जेली, आलू व केले से चिप्स, दूध से दूध का पाउडर, दही, छाछ,मक्खन, घी, पनीर, टमाटर व आम से अचार व चटनी तैयार करके तथा मूल्य संवर्धन से रोजगार स्थापित किया जा सकता है। ■

मशरूम की खेती के साथ रोजगार



प्राय: कहा जाता है कि स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन होता है। खानपान में परिवर्तन के कारण मशरूम, पौष्टिकता की दृष्टि से बहुत ही स्वस्थ आहार है। मशरूम की खेती कम पूंजी और भूमि की आवश्यकता होती है। ग्रीनहाउस में तापमान को व्यवस्थित करके में पूरे वर्ष रोजगार प्राप्त करके अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। मशरूम की खेती का प्रशिक्षण होना बहुत जरूरी है,जोकि नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या राष्ट्रीय मशरूम केंद्र सोलन से प्राप्त किया जा सकता है।

कृषि क्षेत्र में सरकारी योजनाएं

युवाओं को आधुनिक कृषि तकनीकों के बारे में जानकारी देने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से कृषि उद्यम के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इनमें मशरूम उत्पादन, मुर्गीपालन, बकरी पालन, मछलीपालन, वर्मीकम्पोस्टिंग, बेकरी, मधुमक्खीपालन, आधुनिक मशीनों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नाम लिया जा सकता है। युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए केन्द्र सरकार इकाई लगाने के लिए सब्सिडी के तहत भारी छूट दे रही है। इसके साथ ही साथ कृषि उत्पादों के विपणन में आसानी एवं फसल उत्पादन के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण के लिए जरूरी बुनियादी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं।